

## Оглавление

|                               |                                |
|-------------------------------|--------------------------------|
| Сохрани... ..4                | Жизнь, не гони... ..34         |
| Будут ягоды... ..5            | И снова стихнет... ..35        |
| Прекрасен!.....6              | Опора моя... ..36              |
| В Рождество... ..7            | Иначе как? ..37                |
| У Бога... я.....8             | Я желаю!.....38                |
| Из "бабушкиных уроков" .....9 | В Прощёное воскресенье... ..39 |
| Мамино и папино... ..10       | Вперёд!.....40                 |
| За городом тихо... ..11       | Делают людьми... ..41          |
| Ну а куда... ..12             | Вечный зов... ..42             |
| Прости меня, Боже ..13        | Зачем поэзия нужна? ..43       |
| Учились сами... ..14          | Первое апреля.....44           |
| Про счастье... ..15           | На краешке... ..45             |
| И пусть... ..16               | Почему в семнадцать лет? .46   |
| Так бывает... ..17            | Зачем спорите? ..47            |
| С надеждой... ..18            | Я упрямый, мама... ..48        |
| А что же дальше... ..19       | Апрельский снег.....49         |
| Другие есть... ..20           | Берега.....50                  |
| Жду весну.....21              | Воспрянет... ..51              |
| Крепитесь... ..22             | Солнце.....52                  |
| Это февраль... ..23           | Что нового? ..53               |
| И нам бы так... ..24          | Что думать... ..54             |
| Хочется на улицу... ..25      | Даже падая... ..55             |
| Эх, если б ты.....26          | Как и прежде... ..56           |
| Жизнь цепкая... ..27          | Дождь ..57                     |
| Снежок пошёл ..28             | Всё в нас самих!.....58        |
| Март... ..29                  | Нашим защитникам!.....59       |
| Добро и зло.....30            | Не обессудь... ..60            |
| Всё равно... ..31             | Воспоминания... ..61           |
| А я не забыла?.....32         | Крыло помятое,.....62          |
| Чаще – «белые»!.....33        | Просто отношусь... ..63        |

|                           |    |                           |     |
|---------------------------|----|---------------------------|-----|
| Путь один!.....           | 64 | Страдать не стоит.....    | 96  |
| Я отвечу... ..            | 65 | За что люблю я лето?..... | 97  |
| Не думай о плохом... ..   | 66 | Не осуждай... ..          | 98  |
| Хранишь .....             | 67 | Дачное... огородное ..... | 99  |
| Кому летать... ..         | 68 | Думаю о прошлом... ..     | 100 |
| Всё случайно... ..        | 69 | Дай путёвку... ..         | 101 |
| Краше нет... ..           | 70 | Гроза... ..               | 102 |
| Можно... ..               | 71 | Невидимая ночь.....       | 103 |
| Если бы я могла... ..     | 72 | Когда-нибудь... ..        | 104 |
| Приму, что есть... ..     | 73 | Отпусти... ..             | 105 |
| Не запугать... ..         | 74 | Летняя зорька .....       | 106 |
| Чем держится душа... ..   | 75 | Июль .....                | 107 |
| Верни .....               | 76 | Вы думаете?.....          | 108 |
| Дождались... ..           | 77 | Вряд ли нужна... ..       | 109 |
| О простом... ..           | 78 | И так под боком... ..     | 110 |
| Завтра - лето... ..       | 79 | Гляди... ..               | 111 |
| Вот и думай... ..         | 80 | Будут рассветы... ..      | 112 |
| Из бабушкиных уроков..... | 81 | И хорошо бы... ..         | 113 |
| Хорошо, что могу... ..    | 82 | Всё в тебе... ..          | 114 |
| Вряд ли сумею... ..       | 83 | Не в нас... ..            | 115 |
| В том и хорошее... ..     | 84 | Отцветает сирень... ..    | 116 |
| Моя лесная красота... ..  | 85 | Ждём... ..                | 117 |
| Живи, пока живёшь... ..   | 86 | Эх, если б слушать... ..  | 118 |
| Кукуй, кукушечка... ..    | 87 | Жизнь люблю! .....        | 119 |
| Зарастало бурьяном .....  | 88 | Сияют небеса... ..        | 120 |
| С Днём России! .....      | 89 | Лето... ..                | 121 |
| Как быть... ..            | 90 | Раньше было тихо, .....   | 122 |
| Цветочек.....             | 91 | С радостью встречать..... | 123 |
| Успеть бы... ..           | 92 | Дождь.....                | 124 |
| Не торопись, жизнь.....   | 93 | Дивья тебе, лето ... ..   | 125 |
| Имеет право... ..         | 94 | Зло прогоним... ..        | 126 |
| Надежда.....              | 95 | Жить просто... ..         | 127 |

|                                |                              |
|--------------------------------|------------------------------|
| Не буду думать... ..128        | Огонь в печи.....160         |
| Грибы пошли... ..129           | И помнить... ..161           |
| Какая погода у лета? ..130     | Осень ..162                  |
| Июль... ..131                  | Во имя жизни ... ..163       |
| Что теперь... ..132            | Будем!.....164               |
| Не мне судить... ..133         | Эх! знать бы ... ..165       |
| Все своё... ..134              | Обещает... ..166             |
| Август.....135                 | И только мы... ..167         |
| Быстро пролетает... ..136      | С веток падает лето... ..168 |
| Малина.....137                 | В лесу... ..169              |
| Про любовь... ..138            | Тревог не стоит ..170        |
| Манит тропинка... ..139        | Не тревожь... ..171          |
| Песню вспоминаю... ..140       | Живите и будьте... ..172     |
| К закату солнышко:.....141     | А там весна... ..173         |
| Как же мило... ..142           | Украшает тротуары... ..174   |
| Когда не хватает души... ..143 | Мы уйдём... ..175            |
| Справимся... ..144             | Сияй!.....176                |
| О семи смертных грехах... 145  | Наш мир таков... ..177       |
| Спасибо, лето... ..146         | Спасибо надо говорить... 178 |
| Поехали куда-нибудь... ..147   | Чудесней нет ... ..179       |
| Север мой... ..148             | Сбереги... ..180             |
| Картошечка... ..149            | Выстоять... ..181            |
| Новодвинску ..150              | Привыкнуть бы... ..182       |
| Вот и осень... ..151           | Будем верить... ..183        |
| Делай что-нибудь... ..152      | Час вечерний ..184           |
| По силам... ..153              | В одолении... ..185          |
| Маска у каждого... ..154       | Подожди, родная... ..186     |
| Не подвластно... ..155         | Предзимье.....187            |
| Всё будет... ..156             | Не плачь... ..188            |
| Но лучше так... ..157          | Иди!.....189                 |
| Настало время... ..158         | Минутки жизни прежней..190   |
| Не пугаю... ..159              | Это будет всегда... ..191    |

|                              |                               |
|------------------------------|-------------------------------|
| Людей мы плохо               | Из "бабушкиных уроков" ...214 |
| понимаем... .. 192           | Учи, Господь... .. 215        |
| Не судите... .. 193          | Какой я стала                 |
| Всю ночь в окошко            | старой бабкой:..... 216       |
| ветер бьёт,..... 194         | Возвращается... .. 217        |
| Лишь бы была ты... .. 195    | Так, как есть... .. 218       |
| Пора уже бы..... 196         | Всё для чего-то... .. 219     |
| Прощание... .. 197           | О самом главном что           |
| Тихая печаль... .. 198       | болтать? .. 220               |
| А что есть снег? .. 199      | Там и общим живём... .. 221   |
| Всё лучшее..... 200          | Что пригрелось в душе... 222  |
| Найду... .. 201              | И снова... .. 223             |
| Не вернуть .. 202            | Так бывает... .. 224          |
| Храни их... .. 203           | В помине нет... .. 225        |
| Добро будить... .. 204       | Что тянет нас? .. 226         |
| Что же это? .. 205           | Держусь я сердцем             |
| О критическом                | за любовь ... .. 227          |
| мышлении )) .. 206           | Ещё принесу... .. 228         |
| Чтоб утвердить .. 207        | Всё было... .. 229            |
| На полгода зима... .. 208    | И осталось на душе... .. 230  |
| Хоть и знал... .. 209        | Качели..... 231               |
| Это счастье... .. 210        | Каждый день – хорош .... 232  |
| Серебряная родина моя .. 211 | Зимнее... .. 233              |
| Всё меньше нас... .. 212     | Про скамейки... .. 234        |
| Зимний сад... .. 213         | Что приложишь... .. 235       |